4 अकेली

मन्नू भण्डारी

(जन्म : सन् 1931 ई.)

मन्नू भण्डारी का जन्म मध्यप्रदेश के भागपुर नामक ग्राम में हुआ था। मन्नू भण्डारी के व्यक्तित्व के विकास में उनके पिता का बहुत बड़ा योगदान रहा है। वे दिल्ली विश्व विद्यालय के मिराण्डा हाउस में प्राध्यापिका रही हैं। आधुनिक कहानीकारों में मन्नू भण्डारी का नाम आदर से लिया जाता है।

मन्नू भण्डारी ने कहानी, उपन्यास एवं नाटक विधा को अपनाया है। 'मैं हार गयी', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यह सच है', 'एक प्लेट सैलाब', 'त्रिशंकु', 'आँखों देखा झूठ' आदि कहानी संग्रह है। 'आपका बंटी', 'स्वामी', 'महाभोज', 'कलावा' आदि उपन्यास हैं। 'बिना दीवारों का घर' नाटक है।

प्रस्तुत कहानी में गाँव की एक महिला के व्यवहार एवं मानवता का चित्रण किया गया है। सोमा बुआ के जवान बेटे की मृत्यु हो गयी थी, इस कारण उसके पति पुत्र वियोग की पीड़ा के कारण तीर्थों में रहा करते थे। अत: बुआ अकेली थी। गाँव में किसी के यहाँ प्रसंग होता तो वे जी-जान से काम करती थीं। संबंधियों के यहाँ जाने के लिए मृत पुत्र की एक मात्र निशानी अंगूठी बेच देती है लेकिन न्यौता नहीं मिलता। यह कहानी एक दु:खी महिला के एकाकी जीवन की संवेदना व्यक्त करती है।

सोमा बुआ बुढ़िया हैं।

सोमा बुआ परित्यक्ता हैं।

सोमा बुआ अकेली हैं।

सोमा बुआ का जवान बेटा क्या जाता रहा। उनकी अपनी जवानी चली गई। पति को पुत्र-वियोग का ऐसा सदमा लगा कि वे पत्नी, घर-बार तजकर तीरथवासी हुए और परिवार में कोई ऐसा सदस्य था नहीं जो उनके एकाकीपन को दूर करता। पिछले बीस वर्षों से उनके जीवन की इस एकरसता में किसी प्रकार का कोई व्यवधान उपस्थित नहीं हुआ; कोई परिवर्तन नहीं आया। यों हर साल एक महीने के लिए उनके पति उनके पास आकर रहते थे; पर कभी उन्होंने पति की प्रतीक्षा नहीं की उनकी राह में आँखें नहीं बिछाईं। जब तक पति रहते उनका मन और भी मुरझाया हुआ रहता, क्योंकि पति के स्नेहहीन व्यवहार का अंकुश उनके रोजमर्रा के जीवन की अबाध गति से बहती स्वच्छन्द धारा को कुंठित कर देता। उस समय उनका घूमना-फिरना, मिलना-जुलना बन्द हो जाता और संन्यासीजी महाराज से तो यह भी नहीं होता कि दो मीठे बोल बोलकर सोमा बुआ को एक ऐसा सम्बल ही पकड़ा दें, जिसका आसरा लेकर वह उनके वियोग के ग्यारह महीने काट दें। इस स्थिति में बुआ को अपनी जिन्दगी पास-पड़ोसवालों के भरोसे ही काटनी पड़ती थी। किसी के घर मुंडन हो, छठी हो, जनेऊ हो, शादी हो या ग़मी; बुआ पहुँच जातीं और फिर छाती फाड़कर काम करतीं, मानो वे दूसरे के घर में नहीं अपने ही घर में काम कर रही हों।

आजकल सोमा बुआ के पति आए हुए हैं और अभी-अभी कहा-सुनी हो चुकी है। बुआ आँगन में बैठी धूप खा रही हैं। पास रखी कटोरी से तेल लेकर हाथों में मल रही हैं; और बड़बड़ा रही हैं। इस एक महीने में अन्य अवयवों के शिथिल हो जाने के कारण उनकी जीभ ही सबसे अधिक सजीव और सक्रिय हो उठती है। तभी हाथ में एक फटी साड़ी और पापड़ लेकर ऊपर से राधा भाभी उतरीं।

''क्या हो गया बुआ, क्यों बड़बड़ा रही हो? फिर संन्यासीजी महाराज ने कुछ कह दिया क्या?''

''अरे, मैं कहीं चली जाऊँ सो ही इन्हें नहीं सुहाता। कल चौकवाले किशोरीलाल के बेटे का मुंडन था, सारी बिरादरी का न्यौता था। मैं तो जानती थी कि ये पैसे का ही गरूर है, जो मुंडन पर भी सारी बिरादरी को न्यौता है; पर काम उन नई नवेली बहुओं से सँभलेगा नहीं, सो जल्दी ही चली गई। हुआ भी वही'' और सरककर बुआ ने राधा के हाथ से पापड़ लेकर सुखाने शुरू कर दिए - 'एक काम गत से नहीं हो रहा था। अब घर में कोई बड़ा-बूढ़ा हो तो बतावे, या कभी किया हो तो जानें। गीतवाली औरतें मुंडन पर बन्ना-बन्नी गा रही थीं, मेरा तो हँसते-हँसते पेट फूल गया।' और उसकी याद से ही कुछ देर पहले का दुख और आक्रोश धुल गया। अपने सहज स्वाभाविक रूप में वे कहने लगीं - भट्ठी पर देखो तो अजब तमाशा; समोसे कच्चे ही उतार दिए और

इतने बना दिए कि दो बार खिला दो और गुलाब जामुन इतने कम कि एक पंगत में भी पूरे न पड़ें। उसी समय खोवा मँगाकर नए गुलाब-जामुन बनाए। दोनों बहुएँ और किशोरीलाल तो बिचारे इतना जस मान रहे थे कि क्या बताऊँ? कहने लगे, 'अम्मा! तुम न होतीं तो आज भद्द उड़ जाती। अम्मा! तुमने लाज रख ली!'' मैं ने तो कह दिया कि अरे अपने ही काम नहीं आवेंगे तो कोई बाहर से तो आवेगा नहीं। ये तो आजकल इनका रोटी-पानी का काम रहता है नहीं तो मैं तो सवेरे से ही चली जाती!

'तो संन्यासी महाराज क्यों बिगड़ पड़े? उन्हें तुम्हारा आना-जाना अच्छा नहीं लगता बुआ!'

'यों तो मैं कहीं आऊँ-जाऊँ सो ही इन्हें नहीं सुहाता, और फिर कल किशोरी के यहाँ से बुलावा नहीं आया। अरे, मैं तो कहूँ कि घरवालों का कैसा बुलावा? वे लोग तो मुझे अपनी माँ से कम नहीं समझते, नहीं तो कौन भला यों भट्ठी और भंडार-घर सौंप दे? पर उन्हें अब कौन समझावे। कहने लगे, तू जबर्दस्ती दूसरों के घर में टाँग अड़ाती फिरती है।'' और एकाएक उन्हें उस क्रोध-भरी वाणी और कटु वचनों का स्मरण हो आया, जिनकी बौछार कुछ देर पहले ही उन पर होकर चुकी थी। याद आते ही फिर उनके आँसू बह चले।

''अरे रोती क्या हो बुआ! कहना-सुनना तो चलता ही रहता है। संन्यासीजी महाराज एक महीने को तो आकर रहते हैं, सुन लिया करो, और क्या?''

''सुनने को तो सुनती ही हूँ; पर मन तो दुखता ही है कि एक महीने को आते हैं तो भी कभी मीठे बोल नहीं बोलते। मेरा आना-जाना इन्हें सुहाता नही, सो तू ही बता राधा, ये तो साल में ग्यारह महीने हरिद्वार रहते हैं। इन्हें तो नाते-रिश्तेवालों से कुछ लेना-देना नहीं; पर मुझे तो सबसे निभाना पड़ता है। मैं भी सबसे तोड़ताड़ कर बैठ जाऊँ तो कैसे चले। मैं तो इनसे कहती हूँ कि जब पल्ला पकड़ा है तो अन्त समय में भी साथ ही रखो, सो तो इनसे होता नहीं। सारा धरम-करम ये ही लूटेंगे, सारा जस ये ही बटोरेंगे और मैं अकेली पड़ी-पड़ी यहाँ इनके नाम को रोया करूँ। उस पर से कहीं आऊँ-जाऊँ वह भी इनसे बर्दाश्त नहीं होता...'' और बुआ फूट-फूटकर रो पड़ीं। राधा ने आश्वासन देते हुए कहा, ''रोओ नहीं बुआ! अरे, वे तो इसलिए नाराज़ हुए कि बिना बुलाए तुम चली गईं।''

''बेचारे इतने हंगामे में बुलाना भूल गए तो मैं भी मान करके बैठ जाती? फिर घरवालों का कैसा बुलाना? मैं तो अपनेपन की बात जानती हूँ। कोई प्रेम नहीं रखे तो दस बुलावे पर नहीं जाऊँ; और प्रेम रखे तो बिना बुलाए भी सिर के बल जाऊँ। मेरा अपना हरखू होता और उसके घर काम होता तो क्या मैं बुलावे के भरोसे बैठी रहती? मेरे लिए जैसा हरखू वैसा किशोरीलाल! आज हरखू नहीं है; इसी से दूसरों को देख-देखकर मन भरमाती रहती हूँ!'' और वे हिचकियाँ लेने लगीं।

पापड़ों को फैलाकर स्वर को भरसक कोमल बनाकर राधा ने कहा, ''तुम भी बुआ बात को कहाँ-से कहाँ ले गईं? अब चुप भी होओ! अच्छा देखो; तुम्हारे लिए एक पापड़ भूनकर लाती हूँ; खाकर बताना कैसा है?'' और वह पापड़ लेकर ऊपर चढ़ गई।

कोई सप्ताहभर बाद बुआ बड़े प्रसन्न मन से आईं और संन्यासीजी से बोलीं ''सुनते हो, देवरजी के ससुरालवालों की किसी लड़की का सम्बन्ध भागीरथजी के यहाँ हुआ है। वे सब लोग यहीं आकर ब्याह कर रहे हैं। देवरजी के बाद तो उन लोगों से कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा; फिर भी हैं तो समधी ही। वे तो तुमको भी बुलाए बिना नहीं मानेंगे। समधी को आखिर कैसे छोड़ सकते हैं?'' और बुआ पुलकित होकर हँस पड़ीं। संन्यासीजी की मौन उपेक्षा से उनके मन को ठेस तो पहुँची; फिर भी वे प्रसन्न थीं। इधर-उधर जाकर वे इस विवाह की प्रगति की खबरें लातीं! आखिर एक दिन वे यह भी सुन आईं कि उनके समधी यहाँ आ गए। ज़ोर-शोर से तैयारियाँ हो रही हैं। सारी बिरादरी को दावत दी जाएगी - खूब रौनक होनेवाली है। दोनों ही पैसेवाले ठहरे।

''क्या जानें हमारे घर तो बुलावा आएगा या नहीं? देवरजी को मरे पच्चीस बरस हो गए, उसके बाद से तो कोई सम्बन्ध ही नहीं रखा। रखे भी कौन? यह काम तो मरदों का होता है, मैं तो मरदवाली होकर भी बेमरद की हूँ।'' और एक ठंडी साँस उनके दिल से निकल गई।

''अरे वाह बुआ! तुम्हारा नाम कैसे नहीं हो सकता। तुम तो समधिन ठहरीं। देवर चाहे न रहे; पर कोई

रिश्ता थोड़े ही टूट जाता है!'' दाल पीसती हुई घर की बड़ी बहू बोली।

''है बुआ! नाम है। मैं तो सारी लिस्ट देखकर आई हूँ।'' विधवा ननद बोली। बैठे-ही-बैठे दो क़दम आगे सरककर बुआ ने बड़े उत्साह से पूछा, ''तू अपनी आँखों से देखकर आई है नाम? नाम तो होना ही चाहिए। पर मैंने सोचा कि क्या जाने आजकल के फैशन में पुराने सम्बन्धियों को बुलाना हो, न हो।'' और बुआ बिना दो पल भी रुके वहाँ से चल पड़ीं। अपने घर जाकर सीधे राधा भाभी के कमरे में चढ़ीं - ''क्यों री राधा, तू तो जानती है कि नई फैशन में लड़की की शादी में क्या दिया जावे है? समधियों का मामला ठहरा, सो भी पैसेवाले। खाली हाथ जाऊँगी तो अच्छा नहीं लगेगा। मैं तो पुराने जमाने की ठहरी, तू ही बता दे क्या दूँ? अब कुछ बनाने का समय तो रहा नहीं, दो दिन बाकी हैं सो कुछ बना-बनाया ही खरीद लाना।''

''क्या देना चाहती हो अम्मा? जेवर, कपड़ा, श्रृंगारदान या कोई और चाँदी की चीज़?''

''मैं तो कुछ भी नहीं समझूँ री। जो कुछ पास है तुझे लाकर दे देती हूँ, जो तू ठीक समझे ले आना। बस, भद्द नहीं उड़नी चाहिए! अच्छा देखूँ पहले कि रुपए कितने हैं?'' और वे डगमगाते कदमों से नीचे आईं। दो-तीन कपड़ों की गठरियाँ हटाकर एक छोटा-सा बक्स निकाला। उसका ताला खोला। इधर-उधर करके एक छोटी-सी डिबिया निकाली। बड़े जतन से उसे खोला उसमें सात रुपए की कुछ रेजगारी पड़ी थी और एक अँगूठी। बुआ का अनुमान था कि रुपए कुछ ज्यादा होंगे पर जब सात ही रुपए निकले तो सोच में पड़ गई। रईस समधियों के घर में इतने से रुपयों से बिन्दी भी नहीं लगेगी। उनकी नज़र अँगूठी पर गई। यह उनके मृत-पुत्र की एकमात्र निशानी उनके पास रह गई थी। बड़े-बड़े आर्थिक संकटों के समय भी वे उस अँगूठी का मोह नहीं छोड़ सकी थीं। आज भी एक बार उसे उठाते समय उनका दिल धड़क गया, फिर भी उन्होंने पाँच रुपए और एक अँगूठी आँचल में बाँध ली। बक्स को बन्द किया और फिर ऊपर को चलीं पर इस बार उनके मन का उत्साह कुछ ठंडा पड़ गया था और पैरों की गति शिथिल! राधा के पास जाकर बोलीं ''रुपए तो नहीं निकले बहू। आएँ भी कहाँ से! मेरे कौन कमानेवाला बैठा है? उस कोठरी का किराया आता है, उसमें दो समय की रोटी निकल जाती है जैसे-तैसे!'' और वे रो पड़ीं। राधा ने कहा- ''क्या करूँ बुआ, आजकल मेरा भी हाथ तंग है, नहीं तो मैं ही दे देती। अरे, पर तुम देने के चक्कर में पड़ती ही क्यों हो? आजकल तो देने-लेने का रिवाज ही उठ गया है।''

''नहीं रे राधा! समधियों का मामला ठहरा! पच्चीस बरस हो गए तो भी वे नहीं भूले और मैं खाली हाथ जाऊँ? नहीं-नहीं, इससे तो न जाऊँ सो ही अच्छा!''

''तो जाओ ही मत। चलो छुट्टी हुई, इतने लोगों में किसे पता लगेगा कि आईं या नहीं।'' राधा ने सारी समस्या का सीधा-सा हल बताते हुए कहा।

''बड़ा बुरा मानेंगे। सारे शहर के लोग जावेंगे और मैं समधिन होकर नहीं जाऊँगी तो यही समझेंगे कि देवरजी मरे तो सम्बन्ध भी तोड़ लिया। नहीं-नहीं, तू यह अँगूठी बेच ही दे।'' और उन्होंने आँचल की गाँठ खोलकर एक पुराने जमाने की अँगूठी राधा के हाथ पर रख दी। फिर बड़ी मिन्नत के स्वर में बोली, ''तू तो बाजार जाती है राधा, इसे बेच देना और जो कुछ ठीक समझे खरीद लेना। बस, शोभा रह जावे इतना ज़्याल रखना।''

गली में बुआ ने चूड़ीवाले की आवाज सुनी तो एकाएक ही उनकी नज़र अपने हाथ की भद्दी मटमैली चूड़ियों पर जाकर टिक गई। कल समधियों के यहाँ जाना है; जेवर नहीं हैं, तो कम-से-कम काँच की चूड़ी तो अच्छी पहन लें। पर एक अव्यक्त लाज ने उनके कदमों को रोक दिया, कोई देख लेगा तो। लेकिन दूसरे ही क्षण अपनी इस कमज़ोरी पर विजय पाती - सी वे पीछे के दरवाजे पर पहुँच गईं और एक रुपया कलदार खर्च करके लाल-हरी चूड़ियों के बन्द पहन लिए। पर सारे दिन हाथों को साड़ी के आँचल से ढँके-ढँके फिरीं।

शाम को राधा भाभी ने बुआ को चाँदी की एक सिन्दूरदानी, एक साड़ी और एक ब्लाउज का कपड़ा लाकर दे दिया। सब कुछ देख पाकर बुआ बड़ी प्रसन्न हुई और यह सोच-सोचकर कि जब वे ये सब दे देंगी तो उनकी समधिन पुरानी बातों की दुहाई दे-देकर उनकी मिलनसारिता की कितनी प्रशंसा करेंगी, उनका मन पुलकित होने लगा। अँगूठी बेचने का ग़म भी जाता रहा। पासवाले बनिए के यहाँ से एक आने का पीला रंग लाकर रात में उन्होंने साड़ी

रंगी। शादी में सफेद साड़ी पहनकर जाना क्या अच्छा लगेगा? रात में सोईं तो मन कल की ओर दौड़ रहा था।

दूसरे दिन नौ बजते-बजते खाने का काम समाप्त कर डाला। अपनी रँगी हुई साड़ी देखी तो कुछ जँची नहीं। फिर ऊपर राधा के पास पहुँचीं- ''क्यों राधा, तू तो रँगी साड़ी पहिनती है, तो बड़ी आब रहती है, चमक रहती है, इसमें तो चमक आई नहीं?''

''तुमने कलफ जो नहीं लगाया अम्मा, थोड़ा-सा माँड़ दे देतीं तो अच्छा रहता। अभी दे लो, ठीक हो जाएगी। बुलावा कब का है?''

अरे, नए फैशनवालों की मत पूछो, ऐन मौकों पर बुलावा आता है। पाँच बजे का मुहरत है, दिन में कभी भी आ जावेगा।

राधा भाभी मन-ही-मन मुस्कुरा उठीं।

बुआ ने साड़ी में माँड़ लगाकर सुखा दिया। फिर एक नई थाली निकाली, अपनी जवानी के दिनों में बुना हुआ क्रोशिए का एक छोटा-सा मेजपोश निकाला। थाली में साड़ी, सिन्दूरदानी, एक नारियल और थोड़े-से बताशे सज़ाए, फिर जाकर राधा को दिखाया। संन्यासी महाराज सवेरे से इस आयोजन को देख रहे थे। उन्होंने कल से लेकर आज तक कोई पच्चीस बार चेतावनी दे दी थी कि यदि कोई बुलाने न आए तो चली मत जाना, नहीं तो ठीक नहीं होगा। हर बार बुआ ने बड़े ही विश्वास के साथ कहा, - ''मुझे क्या बावली ही समझ रखा है, जो बिना बुलाए चली जाऊँगी? अरे, वह पड़ोसवालों की नन्दा अपनी आँखों से बुलावे की लिस्ट में नाम देखकर आई है। और बुलावेंगे क्यों नहीं? शहरवालों को बुलावेंगे और समधियों को नहीं बुलावेंगे क्या?''

तीन बजे के करीब बुआ को अनमने भाव से छत पर इधर-उधर घूमते देख राधा भाभी ने आवाज लगाई- ''गईं नहीं बुआ?''

एकाएक चौंकते हुए बुआ ने पूछा - ''कितने बज गए राधा?'...क्या कहा, तीन? सरदी में तो दिन का पता ही नहीं लगता है। बजे तीन ही हैं और धूप सारी छत पर से ऐसे सिमट गई मानो शाम हो गई हो।'' फिर एकाएक जैसे ख़याल आया कि वह तो भाभी के प्रश्न का उत्तर नहीं हुआ तो ज़रा ठंडे स्वर में बोली, ''मुहरत तो पाँच बजे का है, जाऊँगी तो चार तक जाऊँगी, अभी तो तीन ही बजे हैं।'' बड़ी सावधानी से उन्होंने स्वर में लापरवाही का पुट दिया! बुआ छत पर से गली में नज़र फैलाए खड़ी थीं, उनके पीछे ही रस्सी पर धोती फैली हुई थी, जिसमें कलफ लगा था और अभरक छिड़का हुआ था। अभरक के बिखरे हुए कण रह-रहकर धूप में चमक जाते थे, ठीक वैसे ही जैसे किसी को भी गली में घुसता देख बुआ का चेहरा चमक उठता था।'

सात बजे के धुँधलके में राधा ने ऊपर से देखा तो छत की दीवार से सटी, गली की और मुँह किए एक छाया मूर्ति दिखाई दी। उसका मन भर आया। बिना कुछ पूछे इतना ही कहा, ''बुआ! सर्दी में खड़ी-खड़ी यहाँ क्या कर रही हो? आज खाना नहीं बनेगा क्या, सात तो बज गए?

जैसे एकाएक नींद में से जागते हुए बुआ ने पूछा, ''क्या कहा, सात बज गए?'' फिर जैसे अपने से ही बोलते हुए पूछा, ''पर सात कैसे बज सकते हैं, मुहूरत तो पाँच बजे का था।'' और फिर एकाएक ही सारी स्थिति को समझते हुए, स्वर को भरसक संयत बनाकर बोलीं - ''अरे, खाने का क्या है, अभी बना लूँगी। दो जनों का तो खाना है, क्या खाना और क्या पकाना।''

फिर उन्होंने सूखी साड़ी को उतारा। नीचे जाकर अच्छी तरह उसकी तह की, धीरे-धीरे हाथों से चूड़ियाँ खोलीं, थाली में सजाया हुआ सारा सामान उठाया और सारी चीज़ें बड़े जतन से अपने एकमात्र सन्दूक में रख दीं।

और फिर बड़े ही बुझे हुए दिल से अँगीठी जलाने बैठीं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

परित्यक्ता पति द्वारा त्यागी हुई स्त्री **सदमा** आघात **एकाकीपन** अकेलापन **एकलता** लंबे समय तक एक जैसी स्थिति का होना **व्यवधान** विध्न, अवरोध **अंकुश** नियंत्रण **संबल** सहारा **आसरा** अवलंबन **गरूर** धमंड **जस मानना**

उपकार मानना **हंगामा** भीडभाड़ शोरशराबा **ठेस** चोट **पुलकित** प्रसन्न **जेवर** गहना, आभूषण **श्रृंगारदान** श्रृंगार के सामान रखने का छोटा बकसा **रेजगारी** छुट्टे पैसे **सिंदूरदानी** सिंदूर रखने की डिब्बी **मिलनसारिता** हिलमिलकर रहने का स्वभाव **आब** शोभा, सुंदरता **फलक** कपड़े को कड़ा करने का तरल पदार्थ **माँड़** पके हुई चावल का पानी **मुहरत** मुहूर्त, शुभ घड़ी **मेजपोश** मेज पर बिछाने का कपड़ा **बावली** मूर्ख, नादान, नासमझ **अनमना** उदास **अभरक** एक चमकीला पदार्थ **धुँधलका** हल्का अँधेरा **संयत** नियंत्रित, शांत, स्थिर **तह करना** मोड़ना, लपेटना

मुहावरे

राह में आँखें बिछाना बेसबीं से किसी का इंतजार करना **छाती फाड़कर काम करना** बहुत अधिक काम करना **भद उड़ना** इज्जत बिगड़ना **लाज रखना** इज्जत बचाना **टाँग अड़ाना** दखल देना, अवरोध पैदा करना **पल्ला पकड़ना** सहारा देना **मन भरमाना** मन को तसल्ली देना **दिल धड़कना** धबराहट होना.

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(1) 'अकेली' कहानी की लेखिका का क्या नाम है?

(क) सोमा बुआ (ख) मन्नू भण्डारी (ग) मृदुला गर्ग (घ) कृष्णा सोबती

(2) सोमा बुआ का पति क्यों तीरथवासी हुआ?

(क) परिवार की नफरत से (ख) धर्म के लगाव से

(ग) पुत्र की मृत्यु से दुखी होकर (घ) बेकारी से

(3) सोमा बुआ की पड़ोसन का नाम क्या था?

(क) राधा (ख) रोहिणी (ग) रूपा (घ) रश्मि

(4) सोमाबुआ के मृत पुत्र की एक मात्र निशानी क्या थी?

(क) कलम-कापी (ख) संदूक (ग) मकान (घ) अंगुठी

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) 'अकेली' कहानी का प्रमुख पात्र कौन है?

(2) सोमा बुआ को अपनी जिन्दगी किसके भरोसे काटनी पड़ती थी?

(3) सोमा बुआ के बेटे का नाम क्या था?

(4) सोमा बुआ को किसके ब्याह का न्यौता नहीं मिला?

(5) सोमा बुआ की छोटी-सी डिबिया में कितने रुपए थे?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) सोमा बुआ पिछले बीस साल से कैसा जीवन जीती थीं?

(2) सोमा बुआ पड़ोसवालों के घर कैसे प्रसंग पर पहुंच जाती थीं? वहाँ क्या करती थीं?

(3) सोमा बुआ के पति का व्यवहार कैसा था?

(4) सोमा बुआ ने अंगूठी क्यों बेच दी?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छ में दीजिए :

(1) सोमा बुआ की पारिवारिक समस्या क्या थी?

(2) सोमा बुआ ने सम्बंधी के वहाँ ब्याह में जाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की थीं?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) अपने ही काम नहीं आवेंगे तो कोई बाहर से तो आवेगा नहीं?

(2) एक काम गत से नहीं हो रहा था। अब घर में कोई बड़ा-बूढ़ा हो तो बतावे, या कभी किया हो तो जानें।

6. निम्नलिखित कथनों की पूर्ति के लिए दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :

(1) बुआ ने बड़े-बड़े आर्थिक संकटों के समय .....मोह नहीं छोड़ा था ।
- (क) मृत पुत्र की एक मात्र निशानी अंगूठी का
- (ख) अपने पति के साथ तीर्थों में रहने का
- (ग) रिश्तेदारों के यहाँ समारोहों में जाने का
- (घ) अच्छा खाने-पीने का

(2) गली में चूड़ीवाले की आवाज सुनकर उनकी दृष्टि .....जाकर टिक गयी।
- (क) अपने हाथ की सुनहरी चूड़ियों पर
- (ख) अपने हाथ की चमकीली चूड़ियों पर
- (ग) अपने हाथ की नीली-हरी चूड़ियों पर
- (घ) अपने हाथ की भद्दी मटमैली चूड़ियों पर

(3) राधा भाभी ने समधियों के यहाँ विवाह में देने के लिए बुआ को बाजार से क्या लाकर दिया?
- (क) चाँदी के बर्तन, कुछ कपड़े तथा सोने की अंगूठी
- (ख) चाँदी की एक सिन्दूरदानी, एक साड़ी तथा ब्लाउज का कपड़ा
- (ग) कुछ आभूषण और साड़ियाँ
- (घ) चाँदी की पाजेब और ओढ़नी

योग्यता-विस्तार

(1) **विद्यार्थी प्रवृत्तिः** प्रेमचन्द की 'बूढ़ी काकी' और मन्नू भण्डारी की 'मजबूरी' कहानी प्राप्त करके पढ़िए।

(2) **शिक्षक प्रवृत्तिः** महिलाओं की समस्या संबंधित अन्य कहानियों की चर्चा करके छात्रों के मन में महिलाओं के प्रति आदर और सहानूभुति के भाव जाग्रत कीजिए।

⊙